बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १ - पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English)में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

४०१/५५०

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

(समय : सुबह ९:०० से ११:१५) **सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र -१**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : नीलकंठ चरित्र - चतुर्थ संस्करण : दिसम्बर - २०१४

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''उनसे जाकर कहो कि ये फल न खाएँ ।'' (३५-३६) २. ''टूट पड़ो उस लड़के और उस बंदर पर ।'' (२८-२९)

३. ''ऐसे पानी को मैं चर्मवारि समझता हूँ ।'' (७९)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. राजा रणजितसिंह को नीलकंठ वर्णी की आज्ञा दु:खदायक लगी । (२३)

२. लाखा कोली की आँखों से आँसू बहने लगे । (८०-८१) ३. नीलकंठ वर्णी ने लोज में गोखा बंद कर दिया । (१००-१०१)

प्र.३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) [५]

१. प्रलोभन का त्याग (१८-२१) २. कृतध्नी सेवकराम (६३-६५) ३. त्यागी को आकाशवृत्ति या अजगरवृत्ति ही चाहिए (१०-११)

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. गोपालयोगी को किस तरह का पूर्ण विश्वास हो गया ? (३८)

२. मुक्तानंद स्वामी को ध्यान में किस के दर्शन होते थे ? (१११)

३. नौ लाख योगीयों किस तरह किस में मग्न रहते थे ? (४६)

४. बुटोलनगर के राजा और उसकी बहन का नाम क्या था ? (३६)

५. नीलकंठ वर्णी ने रामानंद स्वामी को लिखे हुए पत्र में कौन सी झलक थी ? (१०७)

प्र.५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. नीलकंठ वर्णी ने सिरपुर और कामाक्षी में किस किस ब्राह्मणों का परिवर्तन किया ? (४२, ४५)

(१) ☐ मगनीराम । (२) ☐ रता बशिया ।

(३) ☐ तेलंगी । (४) ☐ पिबैक ।

२. नीलकंठ वर्णी ने आश्रम में कि हुई विविध सेवाएँ । (१०२)

(१) ☐ गोबर उठाते थे । (२) ☐ रसोई करते ।

(३) ☐ पानी खींचकर साधुओं को स्नान करवाते । (४) ☐ भिक्षा माँगना ।

प्र.६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । [४]

१. ..... गाँव मे रहनेवाली लखु चारण ..... थी । (८५)

२. कुकड गाँव के ..... दरबार के सेवक ..... थे । (८२)

३. प्रभु के बाएँ चरण में ..... और दाएँ चरण में ..... चिह्न होते हैं । (६६)

४. ..... में गोबर बीनने निकली हुई स्त्रियाँ को गोबर में ..... का नज़ारा दिखाई देता था । (१०४)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग - १ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''आज तुमको स्वस्थ कर दें, चलो मिल लें ।'' (५०)

२. ''तुम्हारे घर की देहली के पास कुमकुम के पाँच चरणचिह्न दिखाई दें तो मेरी बात सच मानना ।'' (१८)

३. ''इसीलिए बिना यहाँ रहे, कोई चारा नहीं है ।''(९)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [४]

१. जेठाभाई के ज्ञानचक्षु खुल गये । (४९) २. खैया की माँ ने ब्रह्मानंद स्वामी को भी ब्रह्म कहा । (७)

प्र.९ 'झीणाभाई ने अदीबा से बोलना बंध कर दिया' (३१-३२)- **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [४]

१. वड़ताल में निर्गुण स्वामी का प्रभाव कैसा था ? (५२)

२. स्वधाम पधारने से पहले ब्रह्मानंद स्वामी ने गुणातीतानंद स्वामी को क्या कहा ? (१०-११)

३. देवानंद स्वामी के आशीर्वाद से दलपतराम क्या बन गये ? (१७) ४. शुकमुनि कैसे महाराज के मंत्री बन गये ? (२२)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १**'' परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

दिनांक महीना साल

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहीं होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विषय और सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । **[६]**

विषय : शास्त्रीजी महाराज ने आशाभाई की कि हुई कसौटी । (६२-६३)

१. शास्त्रीजी महाराज ने कहा, 'तुम लोग तो दिल्ली के सेठ लोग जैसे हो ।' इस मन्दिर के निर्माण का काम तुम्हें ही पूरा करना पड़ेगा । **२.** स्वामीश्री ने कहा, 'यह तो समझो हमारे ही कार्य में विघ्न आ गया ।' **३.** गद्‌गद आवाज़ में आशाभाई ने कहा, 'ऐसा अवसर भला कैसे टाला जा सकता है ?' **४.** बोचासण मन्दिर की मूर्तियों के लिए आशाभाई के पास शास्त्रीजी महाराज ने रकम की माँग की । **५.** वो खेती में बहुत परिश्रम करते थे, परन्तु कोई न कोई दैवी आपत्ति आ जाती थी, फिर भी उन्होंने कभी स्वामीश्री के पास कोई प्रार्थना नहीं की । **६.** आशाभाई ने उदेपुर में खेती के लिए थोड़ी ज़मीन ले रखी थी । **७.** मोतीभाई बोले, 'ऐसी विषम स्थिति में भी यह सेवा !! दूसरा कोई शायद ऐसा नहीं कर सकता ।' **८.** मोतीभाई के द्वारा किसी सराफ के यहाँ से आवश्यकता के अनुसार पैसे मँगवाये । **९.** सारंगपुर मन्दिर में मूर्तिप्रतिष्ठा का समय निकट था, स्वामीश्री रढु पधारे थे । **१०.** जब रढु में आग लगी, तब शास्त्रीजी महाराज और आशाभाई पुरुषोत्तमपुरा में थे । **११.** सब कुछ भस्मीभूत हो गया था । रढु से खिचडी मँगवाकर सब ने रात का भोजन किया । **१२.** आशाभाई बडौदा के पास पादरा नामक गाँव के रहनेवाले थे ।

(१) केवल सही क्रमांक ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

(२) यथार्थ घटनाक्रम ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[४]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छू के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र **देसाईभाई चारागाह** में **काम** करते समय **सर्पदंश** होने से धाम पधारे । बाद में **भगतजी महाराज** के साथ आकर **आशाभाई** को **जय स्वामिनारायण** कहा ।

१. भक्तराज जोबनपगी : सुंदर ने हाथ जोड़कर स्वामी से कहा : स्वामी! चिंतामणि के समान आप मुझे मिल गये हैं, अब मुझे किस वस्तु की कमी है, जो कि मैं दान के रूप में माँगू ? हाँ, एक इच्छा है कि आप दिवाली का उत्सव यहीं मनाइए । (३७)

२. भक्तराज दरबार श्री झीणाभाई : कई बार जब झीणाभगत तप करके स्वामी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करते तो स्वामी कहते : 'ज्यादा तप करना अच्छा नहीं, ऐसा तप, ऐसा त्याग चिरंजीवी नहीं होता ।' (२८-२९)

३. सद्‌गुरु ब्रह्मानन्द स्वामी : रास्ते में 'धमड़का' गाँव पड़ता था, वहाँ वे कुछ समय ठहरे और विद्वान भट्ट से शिल्प और स्थापत्य का शिक्षण लिया । यहीं आत्मानंद स्वामी के दर्शन हुए । उनसे कारीगरी सीख कर वे आगे बढ़े । (२)

४. स्वामी निर्गुणदासजी : शाम से रात तक परिश्रम करके गन्दे कचरे का बड़ा भारी ढेर-घूरा अकेले ने साफ़ कर दिया, ऐसे अल्प स्तर की सेवा वे कहीं न कहीं से खोज लेते थे । (५६)

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । **[१०]**

१. प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव : योगयज्ञ के नियम
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - फरवरी - २०१६, पा.नं. १२ से १४)

२. साबुदाणा : शाकाहारी फलाहार या मांसाहार ?
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - सितम्बर - २०१५, पा.नं. ४८ से ५०)

३. ताज ओफ ब्रिटन का द्विदशाब्दी महोत्सव
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - अक्तूबर - २०१५, पा.नं. ४ से ११)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १० जुलाई, २०१६ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx